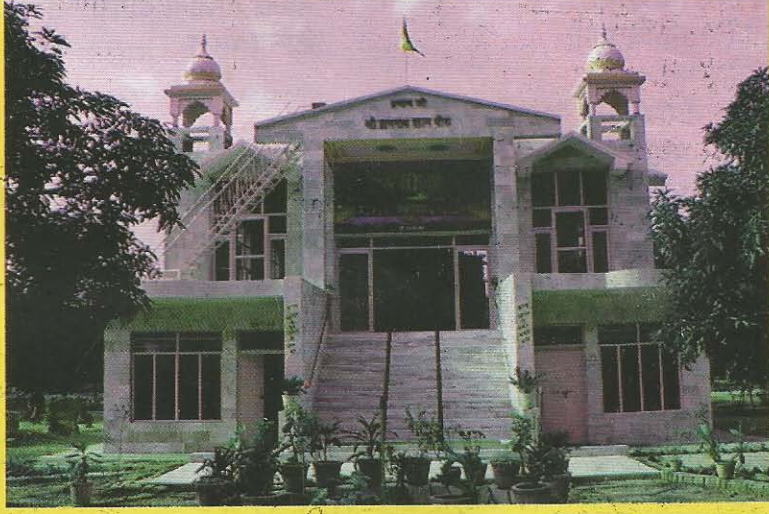


तारतम मंजरी

वर्ष २ अंक २ जून २०१६ पृष्ठ २८

ब्रह्मज्ञान ही अमृत है

प्रेम ही जीवन है



स्वत्वाधिकारी :

श्री प्राणनाथ ज्ञान पीठ

नकुड़ रोड, सरसावा, जिला-सहारनपुर, उ.प्र.

फोन नं. : ०१३३१.२४६०००, ८६५०८५१०१०

ई-मेल : shriprannathgyanpeeth@gmail.com. web : spjin.org

अनुक्रमणिका

०१. सम्पादकीय (नववर्ष सन्देश)	अमरलाल सेठी	०१
०२. कलश हिन्दुस्तानी टीका के अंश	श्री राजन स्वामी	०३
०३. तुमको इस्क उपजावने.....	जै किशन निजानन्दी	०६
०४. ताला द्वार न कुंजी खोलना	कान्ता भगत	१३
०५. हके निसबत वास्ते...	किरण बाला	१६
०६. संगति	१६
०७. धर्म (गुण-क्षमा)	राजबाला, बेहट	२०
०८. आर्कषण	अमन, ज्ञानपीठ	२३
०९. सच्चा मित्र विकास की ओर..	२४
१०. जोश व आवेश	नरेश टंडन	२५

आवश्यक सूचनायें

प्यारे सुन्दरसाथ जी! जिस किसी सुन्दरसाथ जी ने आर्थिक सेवा एकत्र करने हेतु पिछले सत्र या सन् 2015 की रसीद बुक ले रखी हैं कृपया वे अपनी-अपनी सत्र की रसीद बुक जल्द ही धनराशि के विवरण सहित श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ में जमा करवाने का कष्ट करें तथा आगामी सन् 2016 की कोई भी रसीद काटने हेतु नये सत्र की रसीद बुक ज्ञानपीठ से पुनः प्राप्त करें।
प्रणाम जी

प्रकाशक :-

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रस्ट,
नकुड़ रोड, सरसावा
जिला-सहारनपुर, उत्तर प्रदेश
फोन - 01331 246000, 246871
वेबसाईट :- www.spjin.org
ई मेल :- shriprannathgyanpeeth@gmail.com

सदस्यता शुल्क

भारत में	विदेश में
वार्षिक 110 रु.
आजीवन 1000 रु.

लेख में प्रगट किये गये विचार लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इनके प्रति सम्पादक, प्रकाशक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र सहारनपुर होगा।

कुल मूल हमारो आनन्द है

जॉय, हैप्पीनेस, ब्लिस, खुशी, सुख, आनन्द, परमानंद, सच्चिदानंद, ब्रह्मानन्द आदि क्या ये शब्द भिन्न-भिन्न स्तर की खुशी की ओर इंगित करते हैं या सभी एक हैं। ये कोई वस्तु है ये कोई मानसिक स्थिति है? कोई विचार है? कोई सत्य है या स्वप्न है? ये शब्द एक पहली की तरह लगते हैं। ये सुख मनुष्य को पूरी तरह संवेदनशील सृजनशील या अधिक विवेकशील भी नहीं बना पाते। यह खुशी कभी बहुत ही छोटी से छोटी बातों से मिल जाती है तो कभी बड़ी उपलब्धियां हमें पूरी तरह खुश नहीं कर पातीं फर्स्ट डिवीजन आने पर भी किसी को वांछित खुशी नहीं मिल पाती क्योंकि उसे फर्स्ट पोजीशन नहीं मिल पाई।

जिस तरह भारत सरकार ने कई 'डे' घोषित कर रखे हैं इसी तरह यूनाइटेड नेशंस ने 20 मार्च को अन्तरराष्ट्रीय हैप्पीनेस डे घोषित कर रखा है। भौतिक संधानों के आधार पर किसी देश को बेहतर तो करार दिया जा सकता है परन्तु प्रत्येक देश के सभी नागरिकों पर यह लागू नहीं हो सकता केवल डे मना लेने सदीवी आनन्द की प्राप्ति नहीं हो सकती।

वेदान्त कहता है कि जो आत्म परीक्षण कर सकता है वही ही आनन्द को जान सकता है। न्याय दर्शन के अनुसार तर्क ही आनन्द है। मीमांसा का कथन है आनन्द तभी सम्भव है जब हम कर्म द्वारा मुक्ति की राह तलाश लें सुकरात ने कहा खुद को जान लेना ही आनन्द है। श्री जी की वाणी भी तो हमें यही कहती है। पेहेले आप पेहेचानो रे साधो पेहेल आप पेहेचानो। अरस्तु ने हमें बताया कि हमें जिस की तलाश है उसे पा लेना ही आनन्द है। अब सोचना यह है कि इनमें से हमारा मार्ग कौन सा है? हमारा सुख, हमारे आनन्द का मूल कौन है और कहां है?

यदि आनन्द की उत्पत्ति तथा विकास पर दृष्टि दौड़ाएं तो हम देखते हैं कि आनन्द का अर्थ परिस्थितियों के अनुसार बदलता रहा है। आम धारणा यही है कि आनन्द या सुख परमात्मा की इच्छा पर निर्भर है। "हक मेहेर तित होत है, जित असल है निसबत। दुख रूपी इन जिमी में, दुःख न काहू देखत। बात बडी है मेहेर, की जो दुख में सुख लेवत। संसार के समस्त राग रंग और रस व्यर्थ हैं। असल आनन्द इस जीवन में नहीं, जीवन के

पार है। कुछ विद्वान आचार्यों का कहना है कि नैतिकतः की राह पर चलने वाले साधक आनन्द के अधिकारी हैं, उनके लिए नैतिकता ही सुख है। अधिकांश देखा जाए जो अनैतिकता में लिप्त हैं, वे ही सुखों की गोद में खेल रहे हैं। कितनी विडम्बना है।

कुछ का कहना है कि आनन्द मन की दशा है और यही जीवन की दशा है। **happiness within**

जैसे कस्तूरी मृग के पेट में होती है और वह जंगलों में ढूँढता है। मन की स्थिति पर ही मानव की भौतिक व अध्यात्मिक संतुष्टि निर्भर करती है। यदि हम अपने जीवन का मूल्यांकन करें कि हमने क्या पाया और क्या खोया, इस तुलना में प्राप्तियों का पलड़ा भारी हुआ तो हम आनन्दित महसूस करते हैं। जो है उस के लिए अभारी जो नहीं उस के लिए विलाप छोड़ देंते तो निश्चित रूप से हमारा आनन्द बढ़ जाएगा। इसी लिए तो विद्वान कहते हैं वर्तमान में जीओ **live in present** हमें अपने सुख अतीत और भविष्य में दिखाई देते हैं। बढ़ती उम्र अनुभव और समय के साथ हम अपने आनन्द के पुराने सिरों को छोड़ते हुए नए सिरे तलाश करने लगते हैं। बच्चों और व्यस्क के आनन्द के मापदण्ड अलग-अलग हैं। आप लाल बत्ती के कारण

चौराहे पर रुके बत्ती हैं, आप के साथ कार में बैठा आपका बच्चा लाल पीली—हरी— बत्ती का आनन्द ले रहा है और आप तनाव में दिखाई देते हैं कि कब लाइन कलीयर हो। आज के युग में नई पीढ़ी के साथ सामंजस्य बैठाना बड़ा ही कठिन हो रहा है। क्योंकि आप के मन पर यौवन क्षय का दुःख, अधूरे स्वप्नों की खरोंच, उपेक्षाओं की कचोटता और तनाव की प्रबलता आप पर हावी हो रही है तो आप को आनन्द कहाँ से मिले?

हमारी कुछ मिथिक धारणाएँ बन गई हैं। पैसा सुख खरीद सकता है। आज हमारे पास कितने अनगणित सुख साधन हैं। क्या इन्हें पाकर भी हम सुखी हैं? क्या सैलरी दुगनी हो जाने पर खुशी दुगनी हो सकती है? यदि जीवन में संघर्ष और दुख मायनस कर दिया जाए तो उस में सुख प्लस किया जा सकता है। लेकिन याद रखो यदि जीवन में श्रम, संघर्ष और सृजनात्मकता नहीं तो भी जीवन व्यर्थ है। आनन्द का फार्मुला, मिट्टी और पसीना मिला दो—बस खुशी तैयार।

सब से बड़ा सुख सन्तोष है। पर आज वैज्ञानिक तो कुछ और ही कहने लगा है कि तुम्हारा आनन्द तुम्हारे जीन्स पर निर्धारित है। यह वंशानुगत गुण है। इस की अनुमति तुम्हारे डी,0 एन,0 ए0 पर निर्भर करती है। बढ़िया घर तेज रफ्तार गाड़ियां

बेहतरीन चिकित्सा की सुविधाएं, रवूब सारी आमदनी, जरा सोचिए ये सारी चीजें हमारे विकास के साथ हमारे आनन्द और सुख को भी बढ़ा पाई हैं क्या? आप की परदादी की परदादी कहीं तुम्हारे किचन और घर के उपकरणों, दर्द निवारक दवाएं, चौबीस घन्टे पानी, बिना धुएँ के चूल्हा, फलों और साब्जियों से भरा रेफिरीजरेटर को देख कर अचरज से कहेगी कि तुम तो स्वर्ग में रहती हो। न चक्की पीसने का झंझट और न मीलों दूर से पानी लाने की चिन्ता। आप तो आनन्द के गीत गाती हुई जागती होंगी। पर अफसोस स्वर्ग न सही पर स्वर्ग जैसी स्थिति में रहते हुए भी आनन्द की अनुमूति कहाँ? कितनी विडम्बना है कि आनन्द के जितने अवसर उपलब्ध हैं फिर भी हम आनन्द से कोसों दूर हैं।

हमारी जीवन शैली, खानपान, रहन सहन सभी कुछ तो बदल गया है। हम हजारों तरह का खाद्य पदार्थ खरीद सकते हैं लेकिन खाते हैं टी0वी0 के सामने, खाते क्या हैं बस निगले जा रहे हैं। जाते हैं खूबसूरत स्थानों पर घूमने या धार्मिक स्थलों पर चर्चा वानी सुनने पर हमारा स्मार्ट फोन हमें इतना व्यस्त रखता है कि जो देखने आए उसका देखने का आनन्द नहीं लिया उस का लुत्फ नहीं उठा पाए जो

अपनी आत्मा की खुराक लेने आए थे वह पूरी तरह न ले पाए। इस फोन की आपा धापी ने सभी कुछ बिगाड़ के रख दिया है। क्या लाभ जब हम अपनी पूरी चेतना से चर्चा वाणी को आत्मसात न कर सके। आज विज्ञान हमारी महत्वाकांक्षाओं और वास्तविकताओं में एक पुल की भूमिका निभा रहा है। स्वास्थ्य और सौन्दर्य की ललक में जी रहे उपभोक्ताओं के लिए ब्यूटीपार्लर जो सौन्दर्य की गारन्टी दे रहा है। फूड प्लाज़ा रेडी टू ईट मील अपनी किचन सजाए बैठा है। ये बाजार आनन्द के नए मायने ले के आप को आवाज़ लगा रहा है। जो सच्ची ब्रह्म सृष्टि होगी वे इस बाजार से आकर्षित नहीं होती। उस का खाना पीना निर्गुण, युगल स्वरूप का दीदार ही उस का जीवन है। वह तो रात दिन यह गाती है सदा आनन्द मंगल में रहिए पर असलीयत में हम परमधाम से आकर अपने लक्ष्य को भूल गए हैं। उस लक्ष्य उस उद्देश्य को पाने के लिए यह निम्न कहानी हमें प्रेरित करेगी और हम चितवन की राह पर चलेंगे। कहानी इस तरह है।

एक कोढ़ी व्यक्ति प्रतिदिन भिक्षा मांगा करता था। रास्ते के किनारे वह अकेला बैठा रहता था। उस रास्ते से गुजरते लोगों में कुछ उसे भीख देते थे और कुछ नहीं देते थे।

एक व्यक्ति प्रतिदिन उस कोढ़ी को देखता था और सेचता था इस व्यक्ति को जीने के लिए किस बात से प्रेरणा मिलती है, कौन सा लालच है, यह क्यों जी रहा है, यह आत्म हत्या क्यों नहीं कर लेता? हर इन्सान के पास जीने के लिए कोई न कोई उद्देश्य होता है किसी के लिए उस के बच्चे उद्देश्य होते हैं और किसी के लिए ज्ञान प्राप्त करना, कोई पैसा कमाने के लिए जीता है तो कोई प्रतिष्ठा पाने के लिए। कोई उपलब्धियों के लिए जीता है तो कोई सेवा के लिए या किसी अन्य उद्देश्य के लिए। हर एक के पास जीने के लिए कोई न कोई वजह होती है पर इस कोढ़ी इन्सान के पास क्या वजह हो सकती है कि वह जी रहा है।?

उस इन्सान की जिज्ञासा प्रबल होती गई और अन्ततः उसने कोढ़ी से पूछ ही लिया तुम क्यों जी रहे हो तुम्हें इतनी

तकलीफ है, दर्द है, ठीक से न खाना मिलता है, न कपड़े तुम फुटपाथ पर रहते हो गन्दगी में रहते हो तुम्हारी तरफ कोई देखता तक नहीं और अगर कोई देखता भी है तो घृणा अथवा दया भाव रखते हुए। फिर भी तुम क्यों जीवन जी रहे हो? उस इन्सान के सवाल पर

कोढ़ी ने बहुत ही अचूक और सटीक जबाब दिया। उसने कहा असल में मैं कौन हूँ? मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है? मैं यहाँ क्यों हूँ। मैं यह जान चुका हूँ और इसलिए जी रहा हूँ। अगर मुझे इस का भान न होता तो अब तक जिन्दा न होता। सभी को लगता है कि मैं दुखी हूँ लेकिन मैं दुखी नहीं हूँ बल्कि मैं आनन्द की स्थिति में हूँ। क्यों? क्यों कि मैं अपने जीवन का उद्देश्य जान चुका हूँ और उस उद्देश्य प्राप्ति के लिए यह आवश्यक भूमिका पूरी ईमानदारी के साथ निभा रहा हूँ। मैं यहाँ इस लिए हूँ कि आप जैसा कोई जिज्ञासु व्यक्ति मेरे सामने से गुजरे और मुझे देखे तो उस के मन में भी यह सवाल उठे कि इतना कष्ट सहने के उपरान्त भी यह व्यक्ति क्यों जी रहा है? आखिर उसके जीवन का उद्देश्य क्या है? और इस जिज्ञासा में वह अपने जीवन के उद्देश्य को खोजने को प्रेरित हो। काश कि हम भी हमें जीवन का उद्देश्य जान पाते। स्वामी जी की इतनी चर्चाएं सुनने के बाद भी। कोई असर नहीं

अमर लाल सेठी
अबोहर

09463233945

कलस गुजराती टीका का अंश

श्री राजन स्वामी

ए रामत मांहे जे रामतो, तेनो न
लाभे पार।

देखाडूं सहु करी सागर, मांहेना
मांहे समाय।।३।।

ए बेखों मांहे वली बेख सोभे,
स्वांग सहु संसार।।१।।

अनेक लोग मार्ग, प्याऊ एवं धर्मशाला
के निर्माण में दया भाव से बहुत अधिक दान
देते हैं। इस प्रकार वे संसार सागर में अपनी
साहूकारी (सेठपना) दिखाकर आन्तरिक रूप
से (मन ही मन) प्रसन्न होते हैं।

इस माया के खेल में जो तरह –
तरह के खेल खेले जा रहे हैं। उनकी कोई
सीमा ही नहीं है। सारा संसार एक नाटक की
तरह है, जिसमें अभिनय करने वालों ने तरह
– तरह की अनेकों वेशभूषा धारण कर रखी
हैं।

अनेक देहरा अपासरा, मांहे
मुनारा मसीत।

कोई वेख जो साध कहावे, कोई
चतुर सुजाण।

तलाब कुआ कुंड वावरी, मांहे
विसामां कई रीत।।४।।

कोई वेख जो दुष्ट कहावे, कोई
मूरख अजाण।।२।।

ये लोग पौराणिक मन्दिरों, जैन
मन्दिरों, मीनारों से युक्त – मस्जिदों, तालाबों,
कुओं, जल के कुण्डों बावड़ियों तथा अनेकों
प्रकार की धर्मशालाओं का निर्माण कराते हैं।

कोई साधु की वेशभूषा में है, तो कोई
चतुर ज्ञानी कहला रहा हैं। कोई अपनी
वेशभूषा से दुष्ट कहलाता है, तो कोई मूर्ख
और अज्ञानी।

कई जुगते जगन करतां, कई
जुगते उपचार।

अनेक पगथी परव परवा, दया
दान देवाय।

कई जुगते धरम पालें, पण
हिरदे घोर अंधार।।५।।

कुछ लोग युक्ति पूर्वक यज्ञ करते हैं,

तो कुछ लोग औषधियों के द्वारा दूसरों का उपचार करते हैं। कई लोग उचित रूप से धर्म पालन का भी अभ्यास करते हैं। किन्तु उनके हृदय में भी अज्ञानता का घोर अन्धकार भरा ही रहता है।

कई जुगते सिध साधक, कई जुगते सन्यास।

कई जुगते देह दमे, पण छूटे नहीं जमफांस॥६॥

कई लोग नियम पूर्वक सिद्ध या साधक की भूमिका में होते हैं तो कुछ लोग सन्यास धर्म का निर्वाह करते हैं। कई लोग समाधि की प्राप्ति के लिये युक्ति पूर्वक शरीर को हठयोग की कठिन साधनाओं से गुजारते हैं, फिर भी वे मृत्यु के बन्धन से छूट नहीं पाते हैं।

कई जुगते वैराग वरते, कई जोग पाले सिध।

मठवाले पिंड पाले, पण नहीं परम नी निध॥७॥

कई नियम पूर्वक वैराग्य का पालन करते हैं, तो कोई सिद्धावस्था की प्राप्ति के लिये योग साधना करते हैं। मठों में रहने वाले सुविधा पूर्ण जीवन से अपने शरीर को पुष्ट करते हैं, किन्तु इनके पास ब्रह्मज्ञान की

निधि नहीं होती है।

आपने नव ओलखे, नव ओलखे परमेस्वर।

तो पार ते केम पामे, जिहां सुध न पोते घर॥८॥

ज्ञान और वैराग्य की राह पर चलने वाले ये लोग न तो अपने स्वरूप की पहचान करते हैं और न परमात्मा की। जिन्हें अपने मूल घर की ही पहचान नहीं है, वे इस मोह सागर से परे कैसे जा सकते हैं।

खटचक्र नाडी पवन, साधे अजपा अनहद।

कई त्रवेनी त्रकुटी, जोती सोहं राते सब्द॥९॥

कुछ लोग प्राणायाम के द्वारा छः चक्रों (मूलाधार, स्वाधिष्ठान, विशुद्ध, अनाहत, आज्ञा एवं सहस्त्रार) तथा नाड़ियों को शोधन की साधना करते हैं। कई ओऽम् एवं अनहद ध्वनि (ताल, मृदंग, झांझ, डम्फ, किंकिण, सिंह, गर्जन, मुरली, शहनाई, वीणा तथा बादलों की गर्जना) को ही सुनने की साधना करते हैं। कई लोग इड़ा, पिंगला और सुष्मना के मिलन स्थान त्रिवेणी तथा दोनों भौंहों के मध्य स्थान त्रिकुटी में संयम (धारणा, ध्यान और समाधि लगाने) की

साधना करते हैं। इस प्रकार इन साधनाओं में वे तरह तरह की ज्योतियों, तरह – तरह के शब्दों एवं 'सोऽहम्' (मैं वही ब्रह्म हूँ) का अनुभव करते हैं।

कोई खट दरसनी कहावे, धरे ते जुजवा वेख।

पारब्रह्मने पामे नहीं, रूदे अंधेरी वसेख॥१०॥

कुछ लोग छः दर्शनों के पारंगत विद्वान कहलाते हैं और सबसे अलग ही प्रकार की वेशभूषा धारण करते हैं। इन्हें परब्रह्म की यथार्थ पहचान नहीं होती और इनके हृदय में शुष्क ज्ञान के अभियान के कारण माया का अन्धकार फैला रहता है।

श्रीपात पंडित ब्रह्मचारी, भट वेदिया वेदांत।

पुराण जोई जोई सर्वे पडिया, परमहंस सिधांत॥११॥

कई लोग पूज्यपाद, पण्डित, ब्रह्मचारी तथा वेद – वेदान्त के विद्वान ब्राह्मण कहलाते हैं। कई तो सभी पुराणों से परमहंसों के सिद्धान्त खोजने में ही लगे रहते हैं।

अलप अहारी निद्रा निवारी, सब्द सत विचारी।

आचारीने नेम धारी, पण मूके नहीं अंधारी॥१२॥

कुछ लोग अपनी कठोर साधना के नाम पर अल्प आहार करने वाले, निद्रा पर विजय प्राप्त करने वाले तथा ब्रह्मज्ञान के कथनों पर विचार करने वाले होते हैं। कुछ लोग आचरण की शुद्धता तथा कर्मकाण्ड के नियमों का दृढ़तापूर्वक पालन करने वाले होते हैं किन्तु ये भी माया के अन्धकार को छोड़ नहीं पाते हैं।

संत महंत अनेक मुनिवर, देखीतां दिगंबर।

जाए सहुए प्रघल पूरे, कापडी कलंदर॥१३॥

संसार में बहुत से सन्त, महन्त, मुनि और सर्वथा नग्न रहने वाले महात्मा दिखायी पड़ते हैं। कुछ मुस्लिम फकीर ऐसे होते हैं जो संसार से विरक्त रहते हैं और काले कपड़े (कापड़ी) पहनते हैं। किन्तु माया के छल रूपी जल के बहाव में सभी बहते हुए ही दिखायी देते हैं।

सीलवंती सती कहावे, आरजा अरधांग।

जती वरती पोसांगरी, ए अति सोभावे स्वांग॥१४॥

कई स्त्रियां सती शीलवन्ती कहलाती

हैं, तो कोई आर्या अर्धांगिनी। इसी प्रकार पुरुषों में कुछ यति हैं, तो कुछ व्रतों का पालन करने वाले व्रती हैं और कुछ कठोर तप करने वाले जैन महात्मा हैं। ये अपने आचरण तथा तप से बहुत अधिक प्रसिद्ध होते हैं।

मलक मुल्ला मलंग जिंदा,
बांग दे मन धीर।

पाक थई थई सहुए पड़िया,
मीर पीर फकीर।।१५।।

कुछ लोग जीते जी सांसारिक सुखों का परित्याग कर देने वाले 'मलंग' हैं, तो कुछ 'मुल्ला' के रूप में मस्जिद में नमाज की अजान देकर अपने मन को शान्त करने का प्रयास करते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो मीर, पीर, या फकीर कहला कर पवित्र बनने का दावा करते हैं।

कई करामात कोटल, औलिया
आलम।

बोदला बेकैद सोफी, जाणी
करे जुलम।।१६।।

कई कुटिलता पूर्वक चमत्कार दिखाते वाले हैं। कई इबादत में मग्न रहने वाले औलिया हैं, तो कई कुरान - हदीसों का ज्ञान रखने वाले आलिम या बोदरे हैं। शरीयत छोड़कर तरीकत की राह पर चलने

वाले कई बेकैदी हैं, तो खुदा से दोस्ती का दावा करने वाले कई सोफी भी हैं। किन्तु ये स्वयं को माया में आसक्त कर अपने आत्मिक स्वरूप पर बहुत अधिक अत्याचार करते हैं।

अनेक मांहे धर्म पाले, पंथ
प्रगट थाय।

आंधला जेम संग चाले, ए
पाखंड एम रचाय।।१७।।

अनेक लोग धर्माचरण की ओट में नये - नये पन्थ (सम्प्रदाय) प्रकट कर लेते हैं। जिस प्रकार, अन्धा व्यक्ति अपने साथ किसी को लेकर चलता है, उसी प्रकार संसार के लोग भी धर्म की ओट में पाखण्ड को ही अपना साथी बनाते हैं।

रमें मांहोंमांहें रब्दे, करे
परसपर क्रोध।

मछ गलागल मांहें सघले, मूके
नहीं कोई व्रोध।।१८।।

ये सभी तथा कथित लोग आपस में विभिन्न विषयों पर क्रोध पूर्वक लड़ते रहते हैं। जिस प्रकार नदी में मछलियां एक दूसरे की वैरी होती हैं, उसी प्रकार इनमें से भी कोई दूसरों से विरोध नहीं छोड़ना चाहता।

।।प्रकरण।।३।।चौपाई।।१०६।।

हमें क्या करना है?

श्री निजानन्द सम्प्रदाय का ज्ञान सबसे ऊंचा ज्ञान सम्पूर्ण मानव मात्र के लिये हैं। इस समय श्री निजानन्द सम्प्रदाय के अनुयायी भारत वर्ष के अनेक प्रान्तों गुजरात, महाराष्ट्र, बिहार, उत्तर-प्रदेश, एम. पी., राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, आन्ध्र प्रदेश आदि में हैं। विदेशों में नेपाल, बर्मा, सयुंक्त राज्य अमेरिका, कनाडा आदि देशों में भी फैले हुए हैं। इस प्रकार उनकी कुल जनसंख्या लगभग 30 लाख है। इस सम्प्रदाय का मुख्य स्थान श्री पदमावती पुरी धाम (पन्ना) है जो मध्य प्रदेश में स्थित है और सबके मुक्ति धाम के रूप में प्रसिद्ध है। हर प्रान्त में श्री प्राणनाथ मन्दिर या श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर के नाम से मन्दिर स्थापित किए गये हैं। हर मन्दिर में सिंहासन पर श्री कुलजम सरूप की वाणी ही पधराई

हुई है। सब का लक्ष्य एक ही है कि परमधाम में मूल मिलावा में बैठे श्री युगल सरूप राज श्यामा जी को मानना। निजानन्द सम्प्रदाय की कुलजम सरूप वाणी का सर्वोच्च ज्ञान हमें बताता है कि पूर्णब्रह्म परमात्मा एक है। हिन्दु मुसलमान, सिख, ईसाई सब एक खुदा के बन्दे हैं सम्पूर्ण विश्व में कुलजम सरूप वाणी फैलानी है। यह तभी हो सकता है जब हम निजानन्द सम्प्रदाय के अनुयायी एक हो कर चलें। सोचने समझने की बात यह है कि क्या हम सब एक होकर चल रहे हैं। हम सब परमधाम में मूलमिलावे में जुगल किशोर श्री राजश्यामा जी को ही मानते हैं पर हम तनों, मन्दिरों, मन्दिरों के पदों मान शान, मैं खुदी, अहंकार, ईर्ष्या के कारण ही एक हो कर नहीं चल पा रहे हैं। मन्दिरों में श्री राजश्यामा जी की

आरती—भोग दिन रात होता है। पाठ भी रखे जाते हैं। भजन सत्संग —भण्डारे भी होते हैं। सुन्दरसाथ का मिलावा भी होता है। सब अच्छा है पर जितनी जागनी का कार्य हर प्रान्तों से होना चाहिए नहीं हो रहा है। किसी की आत्मा को ब्रह्म ज्ञान सुना कर उसकी आत्मा को श्री राजश्यामा जी के चरणों में लगाएं यही सबसे बड़ा कार्य है। ब्रह्मज्ञान से बड़ा कोई दान नहीं कोई सेवा नहीं, और इसके लिए कुछ कुरबानी करनी पड़ेगी। अगर हम सब दिल में प्रेम लेकर कुछ झुक कर एक हो कर चलें तो पूरे विश्व में जागनी का कार्य शीघ्र ही फैलेगा और पूरे विश्व को कुलजम सरूप का अखंड खजाना जो हमारे पास है दे सकेंगे। जब तक हम एक होकर नहीं चलेंगे यह खेल भी खत्म नहीं होगा और ना ही महाप्रलय होगी और ना हम परमधाम में जाग सकेंगे।

महामत कहे मेहर की, रूहों आवे एक नजर।

तो तबहीं रात को मेट के, जाहेर करे फजर।।

हम पूरे विश्व को एक पूर्णब्रह्म की क्या पहचान करायेगें जब हम खुद एक हो कर नहीं चल रहे।

तीस लाख की जन संख्या जो राज श्यामा जी के चरणों में आ चुकी है आज सब मिल जायें और पूरे विश्व में जागनी के कार्य में जुड़ जायें। लाख सुन्दर साथ एक रूपये की सेवा दें तो हम 30 लाख रूपये इकट्ठे कर सकते हैं। इन्हीं 30 लाख रूपयों से हम टेलीविजन अखबार फोनों, मोबाईलों द्वारा सबसे सम्पर्क करके पूरे विश्व को बता सकते हैं कि हमारे पास कुलजम सरूप का वो खजाना है जिसके लिए लक्ष्मी जी ने भी सात कल्पांत तपस्या की पर ना पा सकी। हम टेलीविजन में अपने प्रवचन रखें। हम संगीत कलाकारों से वाणी गायन करवायें। अखबारों में उस पूर्णब्रह्म सच्चिन्दानन्द के बारे में छपवायें—बतायें इस दुनिया को कि परमधाम अखण्ड है, मूलमिलावा है, श्री राजश्यामा जी युगल किशोर सिंघासन पर विराजमान हैं जिन्होंने इस ब्रह्माण्ड को मुक्ति देनी हैं।

निजनाम सोई जाहेर हुआ, जाकी सब दुनी राह देखत।

मुक्त देसी

ब्रह्मांड को ,आए ब्रह्म आतम सत।।
यह कार्य इतना

आसान नहीं हैं जितना लिखने में आसान है। इस कार्य में वक्त लगेगा चाहे पांच या दस वर्ष लगे। जागनी के कार्य में बुजुर्गों ने अपने अनुभव बांटना है और युवा वर्ग ने तन—मन—धन से सहयोग देना है। अधिक से अधिक विभिन्न भाषाओं में अभिव्यक्ति करने के लिए विद्वानों को तैयार किया जायेगा। अधिक से अधिक वाणी गायन कलाकार तैयार करने पड़ेगे जो संगीत की शिक्षा लेकर पूरे विश्व में वाणी गायन करेंगे। हम सबको अपने दिल को मन्दिर बनाना है। दिल में प्यार लेकर झुक कर अपनी मैं खुदी अहंकार, ईर्ष्या को त्याग कर अपने दिल में मूल मिलावे में बैठे युगल सरूप को बसा कर इस तरफ अपने कदम बढ़ाने हैं। 30 लाख सुन्दर साथ जो श्री राज श्यामा जी के चरणों में आ चुके हैं सब को इस कार्य में सहयोग देना पड़ेगा तभी यह कार्य शीघ्र हो पायेगा और तभी हम इस दुनियां को दुःखों से दूर कर योग माया में मुक्ति देकर अपने नूरी तनों में जाग सकेंगे। पूरे विश्व में कुलजम सरूप की वाणी गूंजे यही हमारा लक्ष्य है।

बड़ी बड़ाई अपनी, सुनी हमारी हम।

हम दे मुक्त सबन को, जाए मिले

खसम।।

वचन हमारे धाम के, फैले है भरथ खंड ।

अब पसरसी त्रैलोक में, जित होसी मुक्त

ब्रह्मांड ।।

आज किसी को भी निजानन्द सम्प्रदाय के बारे में पता नहीं है। हमारे सम्प्रदाय का ज्ञान सबसे ऊंचा है। निजानन्द सम्प्रदाय सभी के धर्म ग्रन्थों का एकीकरण करके एक पारब्रह्म की पहचान कराता है। अब तक के किसी भी अवतार, तीर्थंकर या पैगम्बर ने सभी के धर्म ग्रन्थों का एकीकरण करके एक सच्चिदानन्द पारब्रह्म की पहचान नहीं करवाई। श्री प्राणनाथ जी ने अपनी वाणी श्री कुलजम स्वरूप के द्वारा वेद और कतेब के ही आधार पर सच्चिदानन्द पूर्णब्रह्म के स्वरूप की पहचान करायी है। हमारे पास सब ग्रन्थ मौजूद हैं। साक्षी के लिए भागवत, गीता, वेद, कुरान, बाईबिल, भविष्य पुराण, गुरु ग्रन्थ साहिब हम खोल—खोल कर सब ग्रन्थों में बता सकते हैं कहां क्या—क्या लिखा है।

जो कछु कहाया, कतेब ने, सोई कहाया
वेद।

दोऊ बन्दे एक साहेब के, पर लड़त बिना
पाए भेद।।

जब आत्मा जागृत होती है तो इश्क में डूब कर धाम धनी को पाती है। जब हम धाम धनी को पा लेते हैं तो हम समझते हैं सब हम ही हम हैं इश्क वाले। ऐसा नहीं समझना चाहिए — इश्क बड़ा रे सबन में, ना कोई इश्क समान। यह बात ठीक है पर सोचो जागनी

के लिए हमें इलम चाहिए अगर हमारे पास इलम नहीं होगा तो हम दूसरों को क्या बता पायेंगे कि क्षर अक्षर से परे अक्षरातीत कहां है। इलम होना जरूरी है तभी जागनी हो सकती है। मैं कौन हूँ?, कहां से आया हूँ? तथा इस तन या ब्रह्मांड के नष्ट होने पर मुझे कहां जाना है? अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म का धाम कहां है? स्वरूप कैसा है तथा वहां की लीला कैसी है? प्रश्नों का उत्तर होने में बड़े-बड़े ज्ञानी ध्यानी भी मौन रह गये। इन प्रश्नों का उत्तर सरल हिन्दुस्तानी भाषा में श्री कुलजम स्वरूप (श्री मुख वाणी) में है। किसी ने भी आज दिन तक उस पूर्णब्रह्म को देखा नहीं, ना पाया। विश्व में एक मात्र कुलजम स्वरूप की वाणी है जिसमें उस पूर्ण ब्रह्म की सूरत का वर्णन है जिसके अन्दर वर्णित परिक्रमा, सागर, तथा सिनगार ग्रन्थ के अध्ययन एवं चितवनि प्रद्वति (परम धाम तथा परब्रह्म के ध्यान) के द्वारा पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत का पूर्ण रूप से साक्षात्कार किया जा सकता है। धाम धनी श्री प्राणनाथ जी ने अपने साथ रहने वाले 5000 की संख्या वाले सुन्दरसाथ को श्री पन्नाजी में 10 वर्षों तक चितवनि करवाई। सुन्दर साथ की आत्मा ने परम धाम के जर्रे-जर्रे का आत्मिक दृष्टि से दर्शन किया। आज हम चितवनि से दूर हैं। सेवा पूजा- पाठ- आरती भोग में लगे हैं। हमें

सबको चितवनि की ओर ले चलना है। भजन बोलना अच्छा है। हर भजन श्री राज जी का ही गुणगान करता है पर सोचो अपने बनाये हुए भजन कीमती है या कुलजम स्वरूप की वाणी गायन करना। तराजू पर तोलो। हमारी इस जुबान से पल-पल कुलजम स्वरूप की चौपाइयां ही निकलनी चाहिए और याद रखो एक दिन ऐसा आयेगा जब यह वाणी पूरे विश्व में गूंजेगी।

हम अपना धन कहां खर्च कर रहे हैं। हजारों रूपयों को हम बढ़िया से बढ़िया रूमाल और बागे वस्त्र बनाने में खर्च कर रहे हैं। भण्डारों पर खीर, पूड़ी, लड्डू, हलवा, में सारा धन खर्च हो रहा है। मन्दिरों की दिवालों को चमकाने में व्यय हो रहा है। हमें अपना धन ब्रह्म- ज्ञान फैलाने में लगाना है यही सबसे बड़ी सेवा है।

अन्त में बड़े अफसोस के साथ यही कहूंगी कि हमें जिस तरह से जागनी की ओर अपने कदम बढ़ाने चाहिए हम नहीं बढ़ा रहे, गांव-गांव शहरों में जागनी शिविर लगवाये जाये। साहित्य- पत्रिकाएं टेलीफोन द्वारा सम्पर्क करके जागनी के कार्य में सहयोग दे ताकि ब्रह्म वाणी कुलजम स्वरूप की वाणी सारे विश्व में फैले।

बबली (नलिनी ढीगरा)
सरसावा-ज्ञानपीठ

चर्चनी, चिन्तन, चितवनि

उठते बैठते सोते, सुपन सोवत जाग्रत ।
खाते पीते
खेलते, सुख लीजे सब बिध इत ॥

प्रायः हम सुन्दरसाथ के बीच में यह धारणा पुष्ट हो चुकी है कि जब हम सुन्दर साथ सोते जागते परमधाम का चिन्तन करते ही रहते हैं तो फिर समय निकाल कर एकान्त में युगल स्वरूप का स्मरण कोई आवश्यक नहीं है और फिर चितवनि के दौरान भी साक्षात्कार तो होता नहीं। उन की यह धरणा सर्वथा निर्मूल है। उपरोक्त चौ० दीदार के पश्चात की दिनचर्या के सन्दर्भ में कही गई है। उठते बैठते, सोते जागते चिन्तन भी आवश्यक है क्यों कि यदि हम युगल स्वरूप तथा परमधाम के पच्चीस पक्षों का चिन्तन नहीं करेंगे, तो माया का ही चिन्तन होगा। मन हमारे शरीर का एक ऐसा भाग है जो आठों प्रहर कुछ न कुछ चिन्तन करता ही रहता है यहां तक कि सोते हुए स्वप्न

के रूप में भी मन हमें माया के अनेक रूप ही दिखलाने का कार्य करता है।

संकल्प-विकल्प करना ही मन का मुख्य काम है। इस मन की वास्तविकता भी वही जान सकता है जिस पर पिया की मेहर हो।

सब कुछ मन
में, न कुछ मन में

खाली मन, मन
ही में ब्रह्म।

महामत मन को सोई देख, जिन दृष्टें
एखुद खसम ॥

मन तो अपना कार्य करेगा ही, तो फिर हम अपने घर तथा युगल स्वरूप की शोभा-सौन्दर्य का चिन्तन क्यों न करें। यद्यपि चर्चनी का ज्ञान होना चिन्तन की प्रक्रिया में अति आवश्यक है परन्तु चितवनि के दौरान चर्चनी के साथ साथ चलना मेरे विचार से ठीक नहीं हैं। क्योंकि चर्चनी में मन बुद्धि का प्रयोग होता है जो कि चितवनि के एकान्त स्मरण में बाधा डालता है। चर्चनी के द्वारा हमें युगल स्वरूप के श्रृंगार तथा पच्चीस पक्षों

की शोभा को जानना है जब कि चिन्तन में उसी शोभा को हृदय में बसा कर उसे निरन्तर चिन्तन की प्रक्रिया में लाना है। चर्चनी में वर्णित पच्चीस पक्षों की शोभा को दिल में बसाना है यदि हम उस के जर्जा जर्जा को तर्क की दृष्टि से देखेंगे तो ज्ञान में ही उलझ कर रह जायेंगे। चर्चनी ज्ञान प्राप्त करवाने का मुख्य स्रोत है जब कि चिन्तन के द्वारा चितवनि में बैठ कर श्री राज जी का स्मरण आसान हो जाता है जब आठो प्रहर युगल स्वरूप का ही चिन्तन करेंगे तो स्वाभाविक रूप से परमधाम तथा श्री राज जी हमारे सेहेरग से भी निकट होंगे।

हमारा लक्ष्य दीदार करना है जब हृदय प्रेम से लबालब भरा हो तो शरीर और संसार का आभास ही नहीं होगा। चर्चनी के पश्चात पल-पल युगल स्वरूप का चिन्तन और फिर चितवनि यहीं हमारा लक्ष्य होना चाहिए। “जब आया प्रेम सोहागी, तो मोहजल लेहेंरा भागी”।

प्रेम की पहचान प्रेम के बिना हो ही नहीं सकती और प्रेम में भीगी आत्मा जीव की वाणी के द्वारा प्रेम का वर्ण कैसे कर पायेगी। वाणी तो हम सभी नित्य-प्रति पढ़ते हैं। इसी वाणी का चिन्तन मंथन भी करते हैं परन्तु ये समस्त साधन मन तथा इन्द्रियों से

होने वाले आध्यात्मिक साधन हैं केवल इन साधनों से युगल स्वरूप का साक्षात्कार होना असम्भव है। अपने घर तथा पिया को याद कर के आंसुओं को भीतर ही भीतर पीने से विरह आयेगा। चिन्तन के पश्चात विरह और विरह में डूबने से इश्क आयेगा। जीव विरहनी को अर्श के उन्ही सुखों में भीगे रहने के लिये धनी से प्रार्थना करेगा तो चितवनी में वहीं सुख मिलेगा जिस की रूह अधिकारी है।

प्यारे सुन्दर साथ जी! अब यह सोचना भी कितना बेमानी है कि हुकम के बिना चितवनि होगी ही नहीं। और हम धनी की अंगना हैं, वाणी पढ़ते हैं। तारतम का पाठ करते हैं और मन्दिर भी जाते हैं, अखण्ड पारायण भी रखते हैं। और फिर चितवनि में बैठने पर भी जब दीदार नहीं होता तो फिर सोचते हैं कि इस में हमारा क्या दोष है। राज जी की हम अंगना हैं। हमें श्री राज जी महाराज परमधाम देर सबेर ले ही जायेंगे। प्यारे सुन्दर साथ जी सोचिए जरा कि ये सारे काम शरीर तथा इन्द्रियों से होते हैं मन माया का है जीव को माया में घसीटने का कार्य करता है फिर इश्क आये तो कैसे? जब परआत्म में परमधाम तथा युगल स्वरूप की छवि बसी हुई है फिर आत्मा उस का

प्रतिबिम्ब है आत्मा में भी यह शोभा ज्यों की त्यों है। श्री राज जी इस नाते से हमारे सेहेरग से भी निकट हैं। आत्मा को तो चाहिए इस्क का आहार, इश्क-प्रेम आते ही युगल स्वरूप की झलक आत्मिक नैनों से दिखाई देगी। अब इस में हुकम का क्या दोष?

कई जन्मों के पश्चात हमें यह मानव तन मिला है। ब्रह्मसृष्टियाँ भी श्यामा जी के साथ उतरी हैं। जब से रूहों को परमधाम के अपना घर होने की खबर मिली है, प्रत्येक क्षण राज जी को पाने के प्रयास में जितनी भी कुरबानी दे रही हैं उसी क्षण से उस के आत्मिक विकास में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है तभी तो वाणी में कहा गया है कि कोई सखी धीरे धीरे कदम बढ़ाती हुई आयेगी तो कोई दौड़ती हुई आयेगी। यह मत सोचिए साथ जी कि जो कुछ भी राज जी की राह पर हम करते हैं। सभी मृत्यु के पश्चात समाप्त हो जायेगा। ऐसा हम सुन्दरसाथ आत्मिक उन्नति की राह पर अलग अलग सीढ़ी पर हैं। मंजिल हमारी सब की एक है परन्तु आत्मिक विकास सब का एक सा नहीं है।

तो प्यारे सुन्दर साथ जी हम सभी सुन्दर साथ याद रखें, तारतम अवश्य पढ़ें, वाणी भी पढ़ें परन्तु केवल तारतम तथा सुबह शाम की सेवा पूजा करने से काम नहीं चलने वाला, चर्चनी का ज्ञान भी आवश्यक है। चर्चनी से युगल स्वरूप तथा परमधाम के

पच्चीस पक्षों की शोभा का ज्ञान प्राप्त कर के चिन्तन के द्वारा चितवनि के लक्ष्य तक पोहोचना है। चिन्तन ही चितवनि के लक्ष्य तक पोहोचाता है चितवनि प्रेम इश्क की प्रयोगशाला है। इसी से हमें पता चलता है कि हम ने अपने उददेश्य को प्राप्त करने में कितनी सफलता प्राप्त की। प्रेम में भीगी हुई आत्मा बिरह में गात गलित हो कर एक दर्द ले कर जी रही है। धनी कब मिलोगे, पिया कब घर चलोगे आत्मा, की यही दर्द भरी पुकार उसे बार बार चितवनि में डूबने के लिए प्रेरित करती है। चिन्तन के द्वारा ही प्रेम रसायन उत्पन्न होगा तो चितवनि में आनन्द आयेगा। हमारा प्रथम और अन्तिम लक्ष्य ही युगल स्वरूप का साक्षात्कार है। चर्चनी से ज्ञान ले कर चिन्तन की ओर बढ़ना है। चितवनि में अपना ध्यान केन्द्रित करने के लिये ये सीढ़ियाँ आवश्यक हैं। चितवनि में साक्षात्कार ही हमारी मंजिल होनी चाहिए।।

“प्रेम दरद इश्क तुमारा मैं फेर फेर मांगू फेर।

प्यारे मिलूं प्यारे पिया सो, प्यारी महामत कहे बेर बेर।।

‘किरंतन’ प्रकरण

“मागत हूँ मेरे दूल्हा”

आप का ही सुन्दर साथ

कान्ता भगत-दिल्ली

मोबाईल-9971509373

प्रश्न और मन

मानव जीवन प्रश्नों से जुड़ा है। प्रश्न मन की लहरों के साथ उपजते हैं। मन की हर हिलोर—प्रत्येक लहर एक नया प्रश्न खड़ा करती है, जीवन की प्रत्येक घटना, जो मन को स्पंदित करती है, अनायास ही नए प्रश्न को जन्म देती है। इसी तरह परिस्थितियां व परिवेश (जो विचार व भावों में लहरें पैदा करने में समर्थ हैं) स्वाभाविक तौर पर अंतश्चेतना में प्रश्नों को जन्म देते हैं। यह क्रम न तो रूकता है, न थमता है, बस नित्य निरन्तर अविराम चलता रहता है। वस्तुतः प्रश्न कई प्रकार के होते हैं। जिज्ञासावश मन में उठने वाला भाव प्रश्न है, प्रश्न के बाद पुनः पूछने का क्रम प्रतिप्रश्न है, तो कुछ लोग किसी विषय पर इतने प्रश्न पूछते हैं कि मूल विषय से ध्यान ही भटक जाए। ऐसा करना अतिप्रश्न पूछना कुप्रश्न कहलाता है। प्रश्नकर्ता का भाव विकसित करने के लिए स्रष्टाव्यवस्था कहलाता है। सर्वप्रथम 'इगो को त्यागकर विनम्रता और जिज्ञासु भाव को विकसित करना आवश्यक है। ऐसा इसलिए, क्योंकि प्रत्येक प्रश्न मन के मौन को तोड़ता है। मन में अशान्ति, बेचैनी व तनाव को जन्म देती है। ये प्रश्न जितने अधिक, जितने गहरे व जितने व्यापक होते हैं, मन की आशान्ति,

बेचैनी व तनाव भी उतना ही ज्यादा गहरा घना और व्यापक होता जाता है। इसी अशांति, बेचैनी व तनाव में अपने ही कोख में उपजे प्रश्न या प्रश्नों के उत्तर खोजने की कोशिश करता है। उसे अपने इस प्रयास में सफलता मिलती है। उत्तर मिलते भी हैं, पर नए प्रश्नों के साथ कोई न कोई प्रश्न चिपक ही जाता है। साथ ही बेचैनी व अशांति बढ़ जाती है

, क्योंकि जो भी घटना फिर वह चाहे प्रश्न की हो या उत्तर की मन में लहरें व हिलोरें पैदा करेगी मन को तनाव, बेचैनी व अशांति से ही भरेगी। इस समस्या का समाधान तभी है, जब मन की लहरें मिटें हिलोरें हटें। फिर न कोई प्रश्न उभरेगा और न किसी उत्तर की खोज होगी। इसके लिए मन को मौन होना होगा। इसी को समाधि कहते हैं जहां सभी प्रश्न स्वाभाविक रूप से समाप्त हो जाते हैं, जहां अशांति अपने आप ही मिट जाती है। बस बनी रहती है ता केवल प्रश्नविहीन अमिट शांति। आध्यात्मिक शक्ति के विकास से इस शांति की प्राप्ति की जा सकती है और जीवन के सभी प्रश्नों का उत्तर स्वतः प्राप्त या अनुभूत हो जाता है।

मस्तानी बाजीराव

प्राणाधार सुंदरसाथ सखियों प्रणाम!

सन् ईस्वी, 2015 वर्ष में प्रदर्शित फिल्म बाजीराव मस्तानी चर्चा का विषय है। अतःस्वाभाविक प्रश्न है कि वास्तव में यह कौन थे? इस फिल्म चलचित्र में मुख्यतः दो चरित्रों का चित्रण किया गया है।

1, बाजीराव (18 अगस्त 1700 जन्म—28 अप्रैल 1740 मृत्यु)

2, मस्तानी

सर्वप्रथम बाजीराव का विवेचन किया जाए कि यह महाशय कौन थे? बाजीराव के पिता का नाम बालाजी विश्वनाथ एवं माता राधाबाई थी यह मराठा शासक छत्रपति शाहु के पेशवा (प्रधान नायक) थे। इन्होंने लगभग 39-40 युद्धों में भाग लिया एवं विजेता रहे। इनके योग्य मार्गदर्शन में मराठा साम्राज्य नित-नवीन शिखर को पहुँचा। इनका कार्यकाल मराठा शक्ति का उत्कर्ष काल था। इनके नेतृत्व में मुख्यतः पूर्ण मालवा (इंदौर क्षेत्र) बुंदेलखण्ड, गुजरात, हैदराबाद, देहली (दिल्ली) युद्ध किए गए।

आपका जीवन एक आदर्श नायक का रहा अतः आप को राउ या राव के नाम उपाधि से पुकारा जाता था। परन्तु एक विजेता का अंत छल कपट वैमनस्य भीतरघात के द्वारा हुआ जो कि दुःखद एवं अविस्मरणीय है कि प्रायः विजेता को चुनौती उनके कटुम्ब परिवार से होती है कि वह विरोधियों का तो शमन करते हैं परन्तु पारिवारिक जनों को नमन ही करते हैं। आपके सहोदर भाई चिमन जी अप्पा एवं पुत्र बाला जी बाजीराव रघुनाथ राव एवं कृष्ण राव (शमशेर बहादुर) सदाशिवराव भाऊ, इत्यादि हैं।

मस्तानी का परिचय प्राप्त करने हेतु इतिहास के पृष्ठों को पलटना होगा। कि वास्तव में यह नायिका कौन है इस महान नायिका के विषय में कई किवंदंतियां हैं।

1 महाराजा छत्रसाल जी देव बुंदेला केसरी की पुत्री

2 पेशवा बाजीराव वाला जी भट्ट की पत्नि

3 निजाम हैदराबाद मीर कमरुद्दीन खॉ की नातिन

4 एक गणिका नृत्यांगना राजनर्तकी इत्यादि—2

वास्तव में मस्तानी कौन थी इसके विषय में भ्रमित करने हेतु ब्रिटिश सतारा रेजीडेंट के सन 1826 व 1828 के दस्तावेजों में वर्णन किया कि मस्तानी एक दरबारी गाणिका या अवैध संतान है। जब कि वास्तविकता इसके विपरीत है।

ऐतिहासिक वर्णन में सत्यता इस प्रकार से है कि महाराजा छत्रसाल जू देव ने सन् 1698 ई में हैदराबाद दक्खिन (दक्षिण) के निजाम मीर कमरुद्दीन खान (जो कि) मुगल सेनानायक पर आक्रमण किया इस भयकर युद्ध में निजाम की शर्मनाक पराजय हुई। औरंगाबाद में एक संधि के पश्चात महाराजा छत्रसाल जू ने मीर कमरुद्दीन को प्राणदान दिया। तत्पश्चात पराजित मीर ने अपनी बेगम के परामर्श पर कि बुंदेला शक्ति का उत्कर्ष अप्रतिम है। अतः अपनी पुत्री रूहानी बाई की शादी महाराजा छत्रसाल जी से करवा दी।

प्राचीन काल में यह सामान्यतः नियम यह था कि पराजित राजा शासक अपनी पुत्री, बहन या अन्य किसी संबन्धी का

विवाह विजेता राजा शासक से करवा कर अधीनता स्वीकार करता था। अतः रूहानी बाई का डोला छत्रसाल जी के महल में पहुँचा। तत्पश्चात सन् 1699 ई में मऊसहानिया के महल में एक अप्रतिम पुत्री का जन्म हुआ। शनै—2 इस पुत्री की शिक्षा दीक्षा धार्मिक, राजनैतिक परिवेश में हुई।

स्नेहवश छत्रसाल जी इस पुत्री को मस्तानी कहते थे क्योंकि यह अपने नृत्य द्वारा श्री राज जी महाराज को भाव विभोर होकर रिझाती थी। विद्वता, योग्यता, सैनिक शिक्षा भी प्रायः बुंदेली परंपरा अनुसार प्रदान की गई। अतः यह एक अप्रतिम योद्धा घुड़सवारी के भी नृत्यशील हो तो युद्धभूमि में शत्रु के लिए काल बनती थी।

सुश्री मस्तानी का जीवन एक आर्दश जीवनचर्या का अप्रतिम अदभुत उदाहरण प्रस्तुत करता है जिसने एक पुत्री, पत्नि, माता के साथ —2 वीरांगना भाव विभोर भक्ति रस में तल्लीन होने का आर्दश संसार में प्रस्तुत किया। इन्होंने विभिन्न युद्धों में अपने पिता व पति का सहयोग किया। इनके द्वारा अनंत पीड़ा को सहन करने के उपरांत भी कभी किसी को प्रताड़ित नहीं किया सन् 1734 ई में एक पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम

शमशेर बहादुर कृष्ण राव रखा गया जो कि श्री राज जी से इनकी अटूट निष्ठा व समपूर्ण को दर्शाति है परन्तु सन् 1740 में रावल खेडी में बाजीराव पेशवा का अवसादग्रस्त अवस्था में ज्वर के कारण निधन हो गया । जब मस्तानि को यह संदेश प्राप्त होता है तो आदर्श नायिका के समान उन्होंने भी अपने प्राण त्याग दिए । इनकी समाधि पबल नामक स्थान पर है ।

यद्यपि इस समय वह रावलखेडी के लिए प्रस्थान कर चुकी थी क्योंकि श्री नाना साहिब बाला जी राव नामक जयेष्ठ पुत्र (पेशवा बाजीराव) ने उनको पुणे में कैद कर लिया था। परन्तु मराठा शासक के आदेशानुसार उनकी रिहाई सुनिश्चित हुई। चिमन जी अप्पा ने 7 मार्च 1740 के पत्र में अपनी असफलता की सूचना नाना जी को प्रदान की कि 17 फरवरी 1740 ई. को निजाम के आक्रमण का दमन कर दिया है परन्तु भाऊ अर्थात् बाजीराव पेशवा जी मस्तानी से बिछुडकर सविचलित हैं अतः मस्तानी की हत्या न की जाए और छत्रपति शाहु महाराज के निर्देशानुसार उनको रिहाकर दिया

जाए। परन्तु नाना जी ने इसकी अवहेलना करके अपनी माता काशी बाई को राव के समीप भेज दिया। इससे राव अत्यधिक व्यथित हुए एवं इसी अवस्था में रूग्ण होकर मृत्यु को प्राप्त हुए, दोनो महान योद्धाओं मस्तानी-बाजीराव के देहावसान के पश्चात इनके पुत्र कृष्ण राव शमशेर बहादुर का पालन पोषण काशि बाई ने किया जो कि पानीपत के युद्ध में अहमद शाह अब्दाली के विरुद्ध युद्ध किया। इनका निधन अत्याधिक रक्तसाव होने के कारण भरतपुर में निधन होने के कारण वही पर अंतिम सस्कार किया गया इनके पुत्र अली बहादुर (सुपुत्र शमशेर बहादुर) बाँदा के नवाब बनाए गए जिन्होंने 1779-1785 में बुँदेल खण्ड की राजधानी पन्ना पर भी शासन करने में सहयोग प्रदान किया क्यों कि आपसी कलह के कारण पन्ना का राजसिंहासन रिक्त था। एवं एक समिति राज काज चलाती थी जिनमें सोने शाह भी एक था जिसने बाद में स्वतंत्र राज्य छत्रपुर की स्थापना की अली बहादुर झांसी की रानी लक्ष्मी बाई का राखी भाई था। जिसने

कि उनके साथ अंग्रेजों के विरुद्ध 1857 में भाग लिया एवं वीरगति को आलिंगन किया इनका पुत्र जुल्फिकार अली को बाद में नवाब बाँदा बनाया गया परन्तु अंग्रेजों ने उनको पेंशन देकर सिरोह इंदोर निर्वासित किया गया। जिनका पुत्र सैफ अली बहादुर नामक रहा जिसकी वंश परंपरा आज भी है।

निरीह आत्मीय जनों की चीत्कार के कारण नाना साहेब पेशवा भी अंग्रेजों के विरुद्ध 1857 में सफल न हो सके। एवं जिस जाति कुल की परंपरा की भेट मस्तानी बाई साहिबा को चढाया गया वह परंपरा भी आज नष्ट हो गई परन्तु मस्तानी का व्यक्तित्व आज भी जीवित है। यही प्रेम की विजय है।

इसका विश्लेषण करने से कुछ रोचक तथ्य प्राप्त होते हैं, जैसे कि

1 महाराजा छत्रसाल जू देव को यह आभास था कि बुँदेला परिवार की कलह के कारण राज्य की सुरक्षा में मराठी सत्ता का सहयोग आवश्यक है।

2 इसी हेतु अपने राज्य का बटँवारा करने के पश्चात एक तिहाई राज्य अपनी जमाता बाजीराव को झाँसी, कालपी इत्यादि प्रदान किया।

3 मस्तानी बाई साहिबा के प्रति मराठों के व्यवहार से मराठा सत्ता शनै 2 क्षीण हुई।

4 बाजीराव पेशवा जैसा वीर नायक मराठों

में पुनः न हुआ। जिसने कि निरंतर 36 यद्धों में महाराजा छत्रसाल जी के समान विजय श्री का वरण किया।

(जिन्होंने 52

युद्धों) में विजय प्राप्त की

5 कृष्ण राव उर्फ शमशेर बहादुर ने पन्ना शासक अमान सिंह जी की चित्रकूट में हत्या के पश्चात हिन्दुपत सिंह पर दवाब बनाया जिससे कि भाई खेत सिंह को पन्ना राज्य का कुछ हिस्सा जागीर रूप में प्राप्त हुआ।

6 शमशेर बहादुर ने अपने तीन हजार सैनिकों सहित पानीपत के मैदान में आक्रमणकारी अहमद शाह अब्दाली का सामना करते समय भरतपुर में वीर गति प्राप्त की।

7 शमशेर बहादुर के पुत्र अली बहादुर को झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई ने मुंहबोला (राखीभाई) बनाया एवं अली ने अंग्रेजों के विरुद्ध 1857 में निर्णायक युद्ध करके वीरगति प्राप्त की।

8 अंग्रेजों ने अलीबहादुर द्वितीय को पेंशन देकर बाँदा से निर्वासित कर दिया जो कि सिहोर इंदोर व भोपाल में रहने लगे तत्पश्चात भारत विभाजन के समय पाकिस्तान जा बसे।

प्रणाम जी

स्वप्न और यथार्थ

जीवन का सूक्ष्म रूप स्वप्न है और स्थूल रूप यथार्थ। जीवन की धारा सूक्ष्म से स्थूल की ओर बढ़ती है। बिना स्वप्न के यथार्थ की सत्रा नहीं हो सकती। इसे इस तरह से भी कह सकते हैं कि विचार करने के बाद उसे कार्य रूप में तब्दील करना स्वप्न से यथार्थ बनने जैसे है। जो जितना बड़ा होता है, लेकिन यह उद्देश्य तब पूरा होता है जब वह यथार्थ में परिवर्तित हो जाता है, स्वप्न और यथार्थ के मध्य जो सेतु का कार्य करता है। वह है साधन। ज्ञान—विज्ञान, गणित, व्यवहार, दर्शन और साहित्य जितने भी विषय हैं सभी स्वप्न और यथार्थ के साथ आगे बढ़ते हैं,

लेकिन ये तब पूरा होता है जब कठोर श्रम साथ में किया जाए। समझना यह भी है कि बेहतर जिंदगी, बेहतर समाज और उच्च मानव मूल्यों के लिए किस तरह के स्वप्न देखे जाए और इन्हें किस तरह यथार्थ में परिवर्तित करें। अच्छे शब्दों, अच्छे विचारों वाले वाक्यों और भावों को मन में बार—बार

दोहराते रहिए। देखिएगा किस तरह शुभत्व का प्रवाह होने लगता है। कहा गया है जो व्यक्ति जैसा स्वप्न देखता है, फिर उस स्वप्न को साकार करने के लिए जैसा प्रयास करता है वैसा वह यथार्थ में परिवर्तित हो जाता है। यानी स्वप्न और यथार्थ दोनों का बराबर महत्व है। ब्रह्मा के दो लाड़ले पुत्र हैं। एक स्वप्न और दूसरा यथार्थ। दोनों में लड़ाई हुई। दोनों ब्रह्मा के पास पहुंचे और बोले—भगवान! आज आप निर्णय कर दीजिए कि हम दोनों में से किसकी महिमा अधिक है? ब्रह्मा को बेटों की नादानी पर हंसी आ गई। वह बोले दोनों जमीन पर खड़े हो जाओ, जमीन पर खड़े—खड़े ही जो आकाश छू लेगा उसकी महिमा सबसे बड़ी है। दोनों को परीक्षा में फेल देखा ब्रह्मा हंसे और बोले, देख लिया न, तुम दोनों की महिमा एक दूसरे के पूरक होने में है, अकेले में नहीं। यह कथानक यह में पूरकता होने चाहिए। किसी एक से जीवन की सफलता नहीं है

जीव को परमात्मा का सम्बोधन

रे, जीव! ऐसा लगता है कि तू मुझसे डरता है। शायद तू मुझे अपने साथ नहीं देखता। तेरे भय का शायद यही कारण है। मैं तुझे विश्वास दिलाता हूँ कि मैं तेरे साथ हूँ।

इस बात को अच्छी तरह से समझ ले और भयमुक्त हो जा। तू घबरा मत, तुझे पता नहीं कि तेरे जीवन का रक्षक तेरे साथ है। जिसने तुझे सूर्य, चन्द्रमा, जल वायु बिना मांगे तेरी रक्षा के लिए दिये हैं। वह रोटी भी देता है और देता भी रहेगा। उसके पास सब कुछ है। तू संदेह मत कर। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि मैं तेरा परम हितैषी हूँ तथा तेरे दुःख का साथी हूँ। क्या मेरा प्रेम, तुझे मेरे से प्रेम करने के लिए मजबूर नहीं करता? क्या मेरी दया, तेरे दिल में मेरे प्रति वफादारी पैदा नहीं करती? तू मेरे प्रेम को देखकर मुझसे प्रेम कर। मेरी दया को देख कर मेरा बन जा। तू

देख कि मैं कितना सुन्दर हूँ। सब कुछ मेरे पास है, इसलिए तू मुझसे प्रेम करना सीख। मैं अन्त तक तेरे साथ रहूँगा। मैं हर आनन्द का आनन्द हूँ। हर पदार्थ, वस्तु वह तुम्हें खुशी देंगे, पर पहले तू मेरा बन। तू घर—संसार के लिए मुझे मत छोड़। वह तो पहले से ही तेरे लिए बनाया है। वह समयानुसार तुझे मिलता ही रहेगा। तू मुझे याद कर। मेरा ध्यान कर। मैं तुझे सारे सुख दे दूँगा। मैं संसार तथा तुझे एक छोटे से सकल्प से पैदा कर दिया है। मुझे इसमें कोई कष्ट नहीं हुआ है। जब मैं तेरी इच्छा के विरुद्ध चलता हूँ, तो तू नाराज होता है। परन्तु तू नित्य अपने मन की मान कर मेरी इच्छा के विरुद्ध चलता है, तो क्या मैं तुझसे नाराज होता हूँ। तू क्या कभी अपने मन से लड़ा है? संसार तुझको अपने स्वार्थों के लिए

बुलाता है। मेरा मन तुझे बहुत—कुछ देने को चाहता है, पर तू मेरे सामने खाली हो कर आ, तांकि तुझे भर दिया जाय। तू सब बातों का ध्यान छोड़ कर केवल मेरा हो जा। केवल मेरा ध्यान कर, यही तेरा धर्म है।

जब तू बहुत छोटा था, अपनी चिन्ता करने योग्य भी नहीं था, मैंने उस समय भी तेरी चिन्ता की, तेरा ख्याल रखा। तू अब भी मेरे लिए वैसा ही है। विश्वास कर मैं तेरी हर प्रकार की चिन्ताओं को दूर करता रहूंगा। तू मुझसे कल की आवश्यकताओं की पूर्ति मत माँग। अपनी इच्छा से मैं तुझे नित्य देता रहूंगा। जब मैं कुछ नहीं देता, तब उसमें भी मैं कुछ दिया करता हूँ। तुझे पता नहीं चलता। मुझे कांटे, फूल से भी सुन्दर लगते हैं। जो कुछ भी देता हूँ, चुपके से लिये जा। मैं तुझसे अधिक तेरी भलाई चाहता हूँ। मैंने जो कुछ तुझको दिया है तू उसमें सन्तुष्ट हो जा। उसका विरोध मत कर। तुझे इसमें कष्ट तो होगा। तू अपनी शक्ति से अपने को नहीं

बदल सकता। तू मेरी इच्छा से संतुष्ट रह, तेरे तन—मन को शान्ति मिलेगी। जब तू मेरा ध्यान करे तो मेरी महानता को अच्छी तरह से समझ। मेरे महान तेज बल का ध्यान करके भय मुक्त हो जा। मैं तुझे अपना विश्वास दिलाता हूँ कि अगर तू मेरी इच्छाओं को अपनी इच्छा से बड़ा बना लो, तो तेरा हृदय पवित्र हो जायेगा। तुझे बेपरवाही मिल जायेगी। मैं उस संसार को आज्ञा दे दूंगा कि तेरी हर बात का ध्यान रखें। तेरी हर मुश्किल में काम आये। अगर तुझ पर कोई कठिनाई आ भी जाए तो मैं स्वयं आ कर तेरे कष्टों को दूर कर दूंगा। पर तू मुझे मत भूल। मेरा हमेशा ध्यान कर। मैं तुम्हारा ध्यान रखूंगा। यह सत्य है, बिल्कुल सत्य है कि तू इस प्रकार सब चिन्ताओं से मुक्त हो जायेगा। हर आराम तुझको मिल जायेगा। तेरे लोक तथा परलोक सब संवर जायेंगे। बस चिन्ता मत कर। बस मेरा नाम लिये जा। परमात्मा का ध्यान किये जा।

हर कृष्ण लाल जुनेजा

तपः स्वाध्या येष्वरणि धानानि क्रियायोगः ॥

हमारी पातंजल योग पद्धति में परंपरा में तप स्वध्याय ईश्वर प्रणिधान इसे ही क्रिया योग कहते हैं। तप—ततो द्वंद्वं सहनं —द्वंद्वो को सहन करना तप है, जो विरोधी जोड़े है उन्हें सहन करना तप है, विरोधी जोड़े मान अपमान दोनो को सहन कर ले अपमान को तो करता है मान नहीं होता, अहंकार आ जाता है बड़ाई हो जाती है बहुत से मान को तो अच्छा मानते हैं पर अपमान को अच्छा नहीं मानते इसी प्रकार से सर्दी—गर्मी किसी को सर्दी अच्छी लगती है गर्मी नहीं, किसी को गर्मी अच्छी लगती है सर्दी नहीं दोनो में जो समान रहे, हानि— लाभ जो विरोधी जोड़े है उनमे जो पूर्णतया समत्व स्थिति को प्राप्त हो जाय वही तप है इस समत्व स्थिति को लाने में जो भी उपाय है।

महर्षि वेद व्यास कहते हैं जो तपस्वी नहीं उसे योग सिद्ध नहीं हो सकता जो तप नहीं

करता उसे सांसारिक भोग भी सिद्ध नहीं हो सकते हैं। तप का उद्देश्य क्या है यह वास्तव में उनके तप का उद्देश्य तो उपलब्धि के हितों में सांसारिक भौतिक है तो यहां पर तप का उद्देश्य हम द्वंद्वो पर पूर्ण विजय प्राप्त कर लें। हर परिस्थिति के अन्दर शांत और समाहित बने रहें। कोई भी किसी भी जटिल समस्या आ जाये। पर हमारे चित्त के अन्दर कोई भी कैसी भी उद्विग्नता पैदा न हो। जो दूसरों को देखकर भी उद्विग्न न हो और जो दूसरे उसे देखकर भी अनुसरण करे देखकर प्रसन्न हो और वह भी दूसरो को देखकर के उद्विग्न न हो। जो मित्र और शत्रु में समान हो चुका है, उस प्रकार मान अपमान में समान हो चुका है वही समत्व योग है।

इसी प्रकार से वेदमंत्रों में भी आता है जिसने इस शरीर को नहीं तपाया वह लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता। चाहे भौतिक हो चाहे अध्यात्मिक हो। तप जीवन को पवित्र करने वाला है उसका विस्तार परमात्मा तक ले जाने वाला है। तप एक सामान्य क्रिया नहीं है तप हमारे इस शरीर को शुद्ध करता है जैसे सोने को बार-बार तपा करके फिर वह सोना शुद्ध हो करके कुदंन कहलाता है उसकी आभा और भी निराली हो जाती है जो सात्विक होती है। इस प्रकार से तप कर भट्टी के अन्दर अपने जीवन को इस प्रकार से कर ले जो पूर्ण समत्व स्थिति के अन्दर आ जाये। स्वाध्याय किसे कहते हैं। अपने आप को पढ़े या किताब को पढ़ें। किताब तो पढ़ ली और अपने आप को पढ़ा कि मैं कहां जा रहा हूं जाना कहां था। यह भी स्वाध्याय है स्वाध्याय का अर्थ जप भी है हमारा जीवन बदलता

चला जाता है क्योंकि जैसी संगती में होगा जैसे अभी ईश्वर की चर्चा थी अब ये ग्रन्थ की चर्चा है जैसे ही जीवन बदलता है। ईश्वर प्राणिधान से ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पित भाव हो जाने से समाधि सिद्ध हो जाती है अर्थात् समाधि बिना भक्ति परिश्रम के लगने लग जाती है। ईश्वर के प्रति समर्पण क्या है? विशेष अखण्ड जप, पूर्ण कोई कामना इच्छा नहीं कोई वासना नहीं, और अखण्ड स्मृति बनाए रखना ये भक्ति विशेष हैं। उस परमापिता परमेश्वर को सारी क्रियाओं का पूर्ण समर्पण प्राणिधान है स्वाध्यादिष्टदेवतासंप्रयोगः।। देवता, सिद्ध पुरुष, ऋषिजन जो स्वाध्यायशील है जप में डूबा हुआ है और आत्माचितनशील है वे उसके दर्शन के लिए जाते हैं। उसके कार्य में सहयोग भी देते हैं।

प्रणाम जी

शरण निजानन्द
ज्ञानपीठ, सरसावा

जन्म—मरण

जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु सुनिश्चित है। मनुष्य जीवन और मृत्यु के चक्र को यदि सही तरह से समझ ले तो काफी हद तक उसकी परेशानियां दूर हो सकती हैं। पांच तत्वों से बना यह शरीर परमात्मा की दी हुई अमूल्य धरोहर है। इसलिए जीते जी यह जानना आवश्यक है कि हम कौन हैं, कहां से आए हैं और अंततः हमें कहां जाना है। भ्रांतियां लोक परपरा के रूप में प्रचलित हैं आज तक जीवन—मृत्यु के सत्य को ठीक से इसलिए नहीं समझा गया कि विज्ञान ने प्रत्यक्ष प्रमाण के आधार पर निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया है। संसार में सब कुछ प्रत्यक्ष नहीं है, अप्रत्यक्ष भी सृष्टि का अंग है। सृष्टि प्रत्यक्ष है उसे अणु कहते हैं और जो

अप्रत्यक्ष है उसे विभु कहते हैं। सृष्टि में दोनों महत्वपूर्ण हैं। जैसे शरीर अणुओं से निर्मित है तो प्राण विभु है। इसलिए प्राणतत्त्व को समझना विज्ञान की समझ से बाहर की चीज है। यही कारण है जन्म और मृत्यु को अभी तक विज्ञान नहीं समझ सका है आइंस्टीन जैसे विज्ञान के महान ज्ञाता के सामने जब परमाणु की अंतिम इकाई सामने आई तो वह स्वयं भ्रमित हो गए। वह निर्णय नहीं कर सके कि परमाणु की अंतिम इकाई प्रकाश है या ध्वनि है। ऐसा इसलिए, क्योंकि विभु की व्यापकता विज्ञान की समझ से बाहर है। इसलिए विज्ञान जब जन्म और मृत्यु की चर्चा करता है तो निष्कर्ष के पहले ही चुप हो जाता है।

आचरण

मनुष्य बौद्धिक प्राणी होने के साथ-साथ सामाजिक प्राणी भी है। इसीलिए स्वभावतः मनुष्य प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अंत क्रिया करता है। पारस्परिक क्रियाएं जिनका संबंध भावना, संवेग, इच्छा आदि से न होकर विशुद्ध विवेक से होता है और ये क्रियाएं प्रत्यक्ष या परोक्ष, तत्काल या तदोपरांत, अच्छे या बुरे रूप में व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं, जिन्हें आचरण कहा जाता है। अगर आपके आचरण से किसी अन्य व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक या अन्य किसी तरह से नुकसान नहीं पहुंचता, तो उसे अच्छा आचरण और जिस आचरण से किसी व्यक्ति का अकारण नुकसान होता है, तो उसे बुरा आचरण कहा जाता है।

मनुष्य की समाजिकता यानी अन्य लोगों के साथ संबंध बनाकर रहने की प्राकृतिक और स्वाभाविक बाध्यता मानवीय आचरण के लिए एक अपरिहार्य मांग करती है। वह मांग है-आचरण का नैतिक मूल्यांकन। इसके लिए आवश्यक है कि मनुष्य आंतरिक और स्वैच्छिक रूप से इस प्रकार का आचरण करे, जो सामाजिक कल्याण को अनुकूल हो। यदि ध्यान से देखा जाए तो समाज में आचरण संबंधी मूल्यों को प्रतिस्थापित करने में कुछ ही लोग या वर्ग

होते हैं, जैसे शिक्षक, राजनेता, धार्मिक गुरु, सिनेमा के नायिकाएं आदि। इस वर्ग को हम संवेदनशील समूह कह सकते हैं। प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सामान्य लोग इनका अनुसरण करने लगते हैं। अस वर्ग को अपना उतरदायित्व समझना चाहिए, तभी समाज का कल्याण होसकता है। इस वर्ग के द्वारा किए गए गलत कार्यों की भर्त्सना की जानी चाहिए और अच्छे कार्यों की पशंसा भी आवश्यक है। संवेदनशील समूह के द्वारा किए गए अवमूल्यात्मक आचरण व चरित्र को अक्षय्य माना जाए तभी समाल से बुरे आचरण का लोप संभव होगा। इसके अलावा आचरण को सुधारने में धार्मिक पुस्तकों या सत्साहित्य का भी अमूल्य योगदान है। यदि आप 'गीता' में भगवान श्री कृष्ण के उपदेशों पर पांच फीसदी भी अमल करते हैं तो आपके जीवन में सकारात्मक सोच के साथ सदाचरण की भी शुरूआत होने लगती है। वस्तुतः विभिन्न धर्मों के विविध धर्मग्रंथ हमें सदाचरण पर चलने का ही संदेश देते हैं। सदाचरण से जीवन में सुख, शांति और आनंद का अहसास किया जा सकता है।

विनम्र निवेदन

धाम धनी के लाडले सुन्दरसाथ जी! वर्तमान समय में श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ सरसावा में शिक्षण, साहित्यिक एवं निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है। जिन सुन्दरसाथ ने इन कार्यों के लिए अपनी सेवाएं लिखवायी है या स्वतः उनके मन में सेवा करने की इच्छा है, कृपया वे इन खातों में धनराशि भेजने का कष्ट करें। इस बात का ध्यान रखा जाय कि जिस सेवा की धनराशि भेजी जा रही है, मात्र उसी खाते की **C.B.S.A/C** संख्या में भेजें।

प्रणाम जी

सेण्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया

- | | |
|---|---|
| 1. खाता धारक का नाम—श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रस्ट
खाता संख्या—3290805513 | पता—शाखा—सरसावा, सहारनपुर उ. प्र.
247232 |
| 2. खाता धारक का नाम—श्री ज्ञानपीठ प्रकाशन
खाता संख्या— 3290804553 | MICR-Code" 247016005
IFSC CODE-CBIN0282531 |

सामान्य खाता संख्या
१३३५०००१००११९१६
पंजाब नेशनल बैंक
सलेमपुर (सहारनपुर) उ.प्र.
RTGS/NEFT IFS
CODE - PUNB0133500

साहित्य खाता संख्या
१३३५०००१००११८७५१
पंजाब नेशनल बैंक
सलेमपुर (सहारनपुर) उ.प्र.
RTGS/NEFT IFS
CODE - PUNB0133500

भवन निर्माण खाता संख्या
३४६७११८८७६७
भारतीय स्टेट बैंक
(११४३६) सरसावा, सहारनपुर
उत्तरप्रदेश, पिन- २४७२३२
IFS CODE- SBIN0011439

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा से प्रकाशित साहित्यों की सूची

क्र. स.	ग्रन्थ का नाम	मूल्य	क्र. स.	ग्रन्थ का नाम	मूल्य
1.	किरंतन टीका	300.00	32.	स्वास्थ्य के प्रहरी	30.00
2.	खिलवत टीका	150.00	33.	अनमोल मोती तफसीरे हुसैनी	50.00
3.	सागर टीका	170.00	34.	जामिल-ए-मारिफल	30.00
4.	श्रृंगार टीका	300.00	35.	फरमान	30.00
5.	सिन्धी टीका	150.00	36.	बुलंद मुकदमा बड़ा मसौदा	40.00
6.	परिक्रमा टीका	275.00	37.	शब-ए-मेअराज	15.00
7.	परिक्रमा टीका (अंग्रेजी)	350.00	38.	शेख जी मीर जी का बयान	20.00
8.	विद्वत्दमनी	200.00	39.	Supreme Truth God	20.00
9.	धाम सुषमा	60.00	40.	सी. डी., डी. वी. डी. तथा एम. पी. श्री. (गायन एवं चर्चा)	
10.	पटदर्शन	200.00	41.	जागो और जगाओ	100.00
11.	दोपहर का सूरज (हिन्दी)	60.00	42.	निजानन्द योग	60.00
12.	दोपहर का सूरज (अंग्रेजी)	80.00	43.	ब्रह्मवाणी चर्चा	40.00
13.	प्रेम का चाँद	65.00	44.	सेवा पूजा	30.00
14.	बोध मंजरी (हिन्दी)	15.00	45.	मुख्तार-ए-हिंद	20.00
15.	बोध मंजरी (अंग्रेजी)	15.00	46.	Nijanand School	120.00
16.	बोध मंजरी (नेपाली)	30.00	47.	श्री मुखवाणी संगीत (राग सहित)	150.00
17.	ज्ञान मंजूषा	20.00	48.	प्रश्नमाला	05.00
18.	हमारी रहनी	50.00	49.	प्राणनाथ महिमा (हिन्दी)	20.00
19.	अमृत बिन्दु	10.00	50.	प्राणनाथ महिमा (गुजराती)	20.00
20.	सत्यांजलि	40.00	51.	बोध मंजरी (गुजराती)	15.00
21.	बाल युवा संस्कार	10.00	52.	सिनगार (गुजराती)	300.00
22.	संस्कार पद्धति	15.00	53.	सागर (गुजराती)	170.00
23.	निजानन्द चित्रकथा	30.00	54.	चितवनी (गुजराती)	05.00
24.	चितवनी	05.00	55.	कैलेंडर	10.00
25.	चितवनी नक्शा	30.00	56.	स्टीकर (प्रणाम जी)	30.00
26.	नित्य पाठ (चौपाई)	15.00	57.	बड़ा स्टीकर (प्रणाम जी)	125.00
27.	नित्य पाठ (बीतक)	05.00	58.	बोध मंजरी (उड़ीया)	15.00
28.	मेहर सागर	10.00	59.	श्री मुखवाणी संगीत	60.00
29.	श्रृंगार के मोती	15.00			
30.	सागर के मोती	10.00			
31.	अनमोल मोती	05.00			